

Because of the soft attitude of the Government there, not only soft attitude but the compromising attitude of the Chief Minister himself, all the havoc is being created in Andhra Pradesh. He is responsible for that. So, it is high time that the Centre also rises to the occasion and sorts out the problem. If the Naxalites give up violence, individual terrorism, nobody has got objection to that, they are welcome to join the mainstream of our political life, but that is not so. There is no such statement pronounced by them and the Government on its own is allowing them a free hand to make use of arms. They are going in groups, parading villages and threatening people. We cannot simply be a mere spectator. All this is happening in Andhra Pradesh today. All the trains are being diverted from Telengana area. Trains going to Madras and other places, their routes are changed. So, I associate myself with the concern expressed by my friend Dr. Sivaji.

THE VICE-CHAIRMAN (DR. R. K. PODDAR): You have made your point. Yes, Mr. Ratnakar Pandey.

SHRI YELAMANCHILI SIVAJI: Mr. Ratnakar Pandey also knows it because he happens to be the Observer of the Congress party there.

SHRI H. HANUMANTHAPPA (Karnataka): We were the observers to oust you from the power.

SHRI YELAMANCHILI SIVAJI: I saw your role in Andhra Pradesh, in Guntur.

Need to take measures for the Development of Varanasi

डा० रत्नाकर पाण्डेय (उत्तर प्रदेश) : माननीय उपसभाध्यक्ष जी, मैं आपका कृताज्ञ हूँ कि आपने मुझे विशेष उल्लेख के माध्यम से वाराणसी और वाराणसी कमिश्नरी के विकास के संबंध में अपनी बात कहने का अवसर दिया है। बनारस तीन लोक से न्यारी नगरी है और पश्चिमी बिहार और पूर्वी उत्तर प्रदेश का सबसे प्रमुख केन्द्र है। इस कमिश्नरी से संसद में उतने

प्रतिनिधि होते हैं जितने पूरे हरियाणा प्रदेश से हैं। लेकिन वहाँ विकास का जो कार्य है वह इस रूप में नहीं किया गया है जिस रूप में होना चाहिए। टूरिस्ट सेन्टर बनारस है और वहाँ विश्व के कौन-कौने से लोग गंगा के किनारे बसे हुए घाटों को और दुनिया के महान विश्व-विद्यालय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय को और बुद्ध की ज्ञान स्थली सारनाथ को देखने जाते हैं। परन्तु वहाँ से जो इतनी अधिक विदेशी मुद्रा टूरिस्ट सेन्टर होने के नाते हम देते हैं उसके बदले में हमें जो सुविधायें मिलनी चाहिए वे नहीं मिलती हैं। इसलिए मैं माँग करूँगा आपके माध्यम से, सरकार से, और विशेषतः हाउसिंग मिनिस्ट्री से, इंटिग्रेटेड टाउन डेवलपमेंट स्कीम के तहत बनारस को भी उस योजना में लिया जाए। और सड़कों, पानी, बिजली इत्यादि जितनी भी सुविधाएँ हैं सब इंटिग्रेटेड टाउन डेवलपमेंट स्कीम के तहत दी जाएँ। हमारी कमिश्नरी में सीमेंट के बहुत बड़े कारखाने हैं और एशिया का सब से बड़ा सीमेंट उत्पादन का क्षेत्र है। लेकिन वहाँ जो मजदूर काम करते हैं उन्हें मास्क आदि नहीं मिला हुआ है। चुरक, डाला और चुनार आदि बड़े-बड़े औद्योगिक स्थल हैं, सरकारी नियन्त्रण में हैं। प्रदूषण पर यह सरकार बहुत ध्यान दे रही है, प्रदूषण रोकना अनिवार्य है और उन सीमेंट के कारखानों में काम करने वाले लोगों को जहाँ आर्थिक दृष्टि से उत्थान के लिए मदद दी जाए वहाँ प्रदूषण उनके फेफड़ों में न फैले और सीमेंट जो चूने के पत्थर से बनता है उसकी रन्ध्रवायु में जा कर उनके जीवन को कम न करे इन के लिए मास्क आदि देने की व्यवस्था की जाए। बनारस कृषि प्रधान क्षेत्र है और हमारे यहाँ धान की जितनी उपज होती है पूर्वांचल में कम इलाकों में होती है। धान का जो पुआल होता है वह पुआल जला दिया जाता है और हजारों टन पुआल जला दिया जाता है। बहुत दिनों से हमारी माँग है कि उस पुआल का उपयोग करते हुए कागज का एक बहुत बड़ा कारखाना बनारस में खोला जाए। मैं आपके माध्यम से माँग करूँगा कि कागज का कारखाना बनारस

[डा० रत्नाकर पाण्डेय]

में खोला जाए। सांस्कृतिक दृष्टि से दुनिया की सब से प्राचीनतम नगरी जहाँ की गलियों में पांडित्य खेलता है, बुद्धिमानिय शुद्धति, बुद्धि की ज्ञान शुद्ध करने की उपासना जहाँ होती है। जहाँ चार-चार, पाँच-पाँच विश्वविद्यालय हैं, जहाँ मधुर मनीहर अतिवसुन्धरे सर्व विद्या की राजधानी है। उस नगरी में अभी तक टेलीविजन स्टूडियो का न होना चिन्ता की बात है। पहले जो स्क्रीम स्वीकृत हुई थी वह गोरखपुर चली गई। दूसरे टेलीविजन स्टूडियो की स्क्रीम इलाहाबाद में चली गई। इसी सदन में हमारे सूचना और प्रसारण मन्त्री ने आश्वासन दिया है कि इलाहाबाद में जमीन उपलब्ध नहीं हुई इसलिए टेलीविजन स्टूडियो को बनारस में (समय की घंटी) अपनी नगरी के विकास के विषय में दो मिनट कह लेने दीजिये।

डा० बापू कालदास (महाराष्ट्र) :
बहुत महत्वपूर्ण नगी की बात है।

डा० रत्नाकर पाण्डेय : सब से प्राचीन नगर की बात है। टेलीविजन स्टूडियो को इलाहाबाद में जमीन न मिलने के कारण बनारस में ट्रांसफर करने की व्यवस्था की है उस काम की टाइम बाऊंड दंग से पूरा किया जाए और बनारस में जल्दी से जल्दी स्टेट गवर्नमेंट और अधिकारियों से जमीन ले कर इस काम को शुरु कराया जाए। इसको टाला न जाए। हमारा सब से ज्यादा एक्सपोर्ट पूर्वांचल का होता है। वहाँ पर टेलीफोन एक्सचेंज के भवन के निर्माण के लिए करोड़ों रुपये की योजना सरकार के पास पड़ी है लेकिन संचार मन्त्रालय कान में तेल डाल कर पड़ा हुआ है। कोई कार्यवाही नहीं कर रहा है। दूर संचार भवन बनारस में बनाना चाहिये। आज भी परतन्त्रता के युग का सब से बड़ा हैड पोस्टऑफिस है, उसका कोई विकास नहीं हुआ है, वह विकास भी

होना चाहिए। डाक तार भवन जैसे बड़े-बड़े महानगरों में बनाए गए हैं उस तरह का डाक तार भवन वहाँ बनना चाहिये। हमारे पूर्वांचल में बनारस, मिर्जापुर, जौनपुर, गाज़ीपुर और दलिया, पाँच जिले आते हैं। इस कमिश्नरी की आँख से मैं इस सदन में अकेला प्रतिनिधि हूँ। आपके माध्यम से मैं मांग करूँगा कि हमारे परकेपिटा इनकम जितनी है उसका एक चौथाई अंश भी हमारे विकास में आज तक 42 वर्षों में हमें नहीं मिला है। गरीबों के लिए जिनके साथ आयाय हुआ है उनके लिए काम करने वाली यह सरकार है तो हमारा जो हिस्सा है, हम कोई आवा और माँग नहीं माँग रहे हैं, बनारस के विकास के लिए हमारा जो अंश है पर केपिटा इनकम के हिसाब से वह हमें मिलना चाहिये। गलाँचा उद्योग को कुटीर उद्योग घोषित किया गया है और पाँच परसेंट इनसेटिव कुटीर उद्योगों को बढ़ाने वालों इस सरकार ने दिया है। गलाँचा उद्योग तीन सौ करोड़ रुपये का फारेन एक्सचेंज प्रति वर्ष देता है और सरकार को दो सौ करोड़ रुपये का फारेन एक्सचेंज बनारसी साड़ियों और बनारसी वस्त्रों के कारबार से मिलता है। इन उद्योगों के विकास के लिए प्रापर दंग से रा मैटीरियल मिलना चाहिए....

(समय की घंटी)... रेशन मिलना चाहिए और जो हमारा हिस्सा है वह हमें मिले। इसके साथ ही अंत में मैं कहना चाहूँगा कि जी०टी० रोड पर, गंगा पर एक नया पुल बनवाने का काम हमारी सरकार ने शुरु किया है, तेजी से काम हो रहा है, उसमें किसी तरह का व्यवधान न आये। इसमें जी०टी० रोड पर एक साइड से आने की और एक साइड से जाने की व्यवस्था हो जायेगी क्योंकि घंटों लोग खड़े रहने हैं इतना हैबो ट्रैफिक रहता है। उसको तेजी के साथ बढ़ाया जाये और नेशनल स्तर पर टूरिस्ट सेंटर घोषित करने के लिए सरकार कार्यवाही करे। हमारी बहुत सी ऐसी जमीन है जो अनुर्वर है, कृषि योग्य नहीं है उसको कृषि योग्य बनाने के लिए सरकार कार्य करे "जननी जन्मभूमि स्वर्गादपि गरीयसी"। अपनी धरती के प्रति, अपनी जन्म-भूमि के प्रति आस्था होनी चाहिए और जहाँ आस्था के वशीभूत

इस सरकार से आपके माध्यम से मैं मांग करूँगा—संयोग से हमारे हाउसिंग मिनिस्टर साहब यहाँ हैं—कि इन्टेग्रेटेड टाउन डेवलपमेंट स्कीम के तहत आप बनारस को जहर सम्मिलित करें और जिस तरह से बनारस का विकास हो रहा है उसको देखते हुए कोई डेवलपमेंट स्कीम प्यूचर के लिए नगर विकास मंत्रालय की ओर से ले आइये।

बलिया में बाढ़ बहुत आती है और गांव के गांव बह जाते हैं। प्रतिवर्ष बाढ़ आती है और प्रति वर्ष हजारों गांव बह जाते हैं। बाढ़ नियंत्रण के लिए बहुत पहले से मांग हो रही है। आपका जल संसाधन मंत्रालय कोई ऐसी योजना निर्धारित करे कि जो बरसात में पानी गंगा की नदियों में बढ़ता है और हजारों गांव बह जाते हैं, मवेशी बह जाते हैं वह सब रूके और उस पानी का उपयोग सिंचाई के लिए हो सके चाहे बांध बनाकर हो चाहे और किसी दृष्टि से लेकिन इस काम को अवश्य किया जाये। इन्हीं शब्दों के साथ बनारस के विकास की जो उपेक्षा हुई है उस उपेक्षा को दूर करने का संकल्प आपके माध्यम से यह सरकार ले, इस ओर मैं ध्यान आकृष्ट करना चाहता हूँ। धन्यवाद।

डा० आपू कांदाते : कई चीजें बहुत सालों से आपके जमाने से पड़ी हुई हैं।

डा० रत्नाकर पाण्डेय : हमारे जमाने में बहुत कुछ हुआ है, उसको रोकिए मत, करवाइये।

THE VICE-CHAIRMAN (DR. R. K. PODDAR): Honourable Members, there are still about ten Members to make their Special Mentions. So, I request all those who are going to speak to restrict their Special Mentions to three minutes. Prof. Chandresh P. Thakur.

Crisis being faced by Universities in Bihar

PROF. CHANDRESH P. THAKUR (Bihar): Mr. Vice-Chairman, Sir, thank you very much for giving me

this opportunity. Once you come to know about the subject, you will make me an exception to the rule which you have just laid down.

DR. BAPU KALDATE (Maharashtra): All exceptions!

THE VICE-CHAIRMAN (DR. R. K. PODDAR): I know all those things that you are going to say.

PROF. CHANDRESH P. THAKUR: Sir, you are an ex-Vice-Chancellor and a teacher. I am going to talk about the problems of education, and you will see the value of it.

THE VICE-CHAIRMAN (DR. R. K. PODDAR): You can have a special discussion.

PROF. CHANDRESH P. THAKUR: Sir, through this House I wish to draw the attention of this Government and, particularly, of the Prime Minister, who also happens to be the Education Minister, to the state of affairs with regard to education in Bihar. We have a gentleman Cabinet Minister sitting, but we have to accept that he is not an Education Minister. I only hope that he will have the persuasive skill to see that the Prime Minister lends his ears and does something about it.

Sir, education in Bihar, particularly university education, is facing a serious crisis. This is common knowledge, this everybody in Delhi or in any other part of India outside Bihar knows and realizes the gravity of that, but nothing much is being done to bring about course correction. At the national level, Mr. Vice-Chairman, we are trying to make good strides in terms of improvement of quality and expansion of the coverage of education at all levels—at the primary, secondary and tertiary levels—but Bihar is facing a deteriorating situation: it is a reversal of the national trend.

Bihar has a long tradition of good education at all levels. It has contributed to the fields of scholarship in